

परसिद्ध पुं. (तद्.) दे. प्रसिद्ध।

परसिया स्त्री. (देश.) हँसिया, छोटा फरसा, तेज धारवाली कुलहाड़ी पुं. एक विशेष प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी से फर्नीचर बनाया जाता है।

परसी स्त्री. (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

परसूक्ष्म पुं. (तत्.) एक सूक्ष्म परिमाण या तौल, जो आठ परमाणुओं के बराबर मानी जाती है।

परसों अव्य. (तद्.) 1. गत दिन या बीते हुए पिछले दिन से पहले का दिन 2. आने वाले कल के बाद का दिन, आगामी कल से अगला दिन यथा- 1. वह परसों आया था 2. वह परसों चला जाएगा।

परस्त्री पुं. (तत्.) पराई स्त्री, परकीया, दूसरे की स्त्री।

परस्त्रीगमन पुं. (तत्.) दूसरे की स्त्री के साथ संभोग, जो कि धर्म की दृष्टि से पाप माना जाता है तथा वैधानिक दृष्टि से अपराध।

परस्पर क्रि.वि. (तत्.) 1. एक दूसरे के साथ, आपस में यथा- (क) परस्पर मिल-जुल कर रहना चाहिए (ख) परस्पर शत्रुता अनुचित है।

परस्परापेक्ष्य वि. (तत्.) 1. एक दूसरे से अथवा एक दूसरे की अपेक्षा रखने वाला 2. अन्योन्याश्रित।

परस्परपमा पुं. (तत्.) 1. अर्थालंकारों में से एक अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान से तथा उपमान की उपमा उपमेय से दी जाती है 2. परस्पर उपमा 3 दे. उपमेयोपमा।

परहरना पुं. (तद्.) परित्याग करना, छोड़ना, तजना।

परहारी पुं. (तद्.) 1. जगन्नाथ मंदिर के वे पुजारी जो मंदिर में ही रहकर प्रहरी की भूमिका निभाते हैं 2. दे. (सं.) प्रहरी।

परहेज पुं. (फा.) 1. रोग को जन्म देने वाली या बढ़ाने वाली वस्तुओं और स्थितियों से बचना। यथा; तामसिक भोजन से परहेज अत्यंत आवश्यक है 2. खाने-पीने की वस्तुओं में संयम बरतना, कुपथ्य से बचना 3. बुरी बातों से बचने का

संकल्प या नियम यथा- असामाजिक सोच या मानसिकता से परहेज करना ही उचित है।

परहेजगार वि. (फा.) 1. परहेज करने वाला, संयमी, कुपथ्य से बचने वाला 2. बुराइयों से बचने वाला, दोषों से दूर रहने वाला 3. इंद्रियों को वश में रखने वाला।

परहेजगारी स्त्री. (फा.) 1. परहेज करने या रखने का कार्य या भाव, संयम रखने का काम या अवस्था 2. दोषों और बुराइयों का परित्याग, पाप से बचने का कार्य।

परांग पुं. (तत्.) 1. दूसरे का अंग 2. श्रेष्ठ अंग।

परांगद पुं. (तत्.) शिव।

परांगव पुं. (तत्.) समुद्र।

परांज पुं. (तत्.) 1. तेल पेरने का यंत्र, कोल्हू 2. फेन 3. छुरी, तलवार आदि का अगला भाग, उसका फल।

परांजन पुं. (तत्.) दे. परांज।

परांतक पुं. (तत्.) शिव।

पराँठा पुं. (देश.) घी लगाकर तवे पर सेकी गई रोटी।

परा उप. (तत्.) संस्कृत भाषा का एक उपसर्ग, जिसका अर्थ है परे, दूरी पर जैसे- पराकरण आगे की ओर जैसे- पराक्रमण, विपरीतता जैसे- पराजय, पराभाव, पराधीन, पराजित वि. 1. जो सबसे अलग हो, उत्तम, श्रेष्ठ स्त्री. 1. चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी जो नादस्वरूपा है और मूलाधार से निकलती है 2. ऐसी विद्या जो इंद्रियेतर पदार्थों का ज्ञान कराती है, ब्रह्मविद्या, उपनिषद् 3. एक प्रकार का सामगान 4. एक नदी का नाम, गंगा पुं. (देश.) 1. एक प्रकार का औजार जो रेशम का कार्य करने वालों के उपयोग में आता है 2. पंक्ति, कतार।

पराई वि. (देश.) 1. अन्य की, किसी दूसरे की 2. जो अपना या आत्मीय न हो।